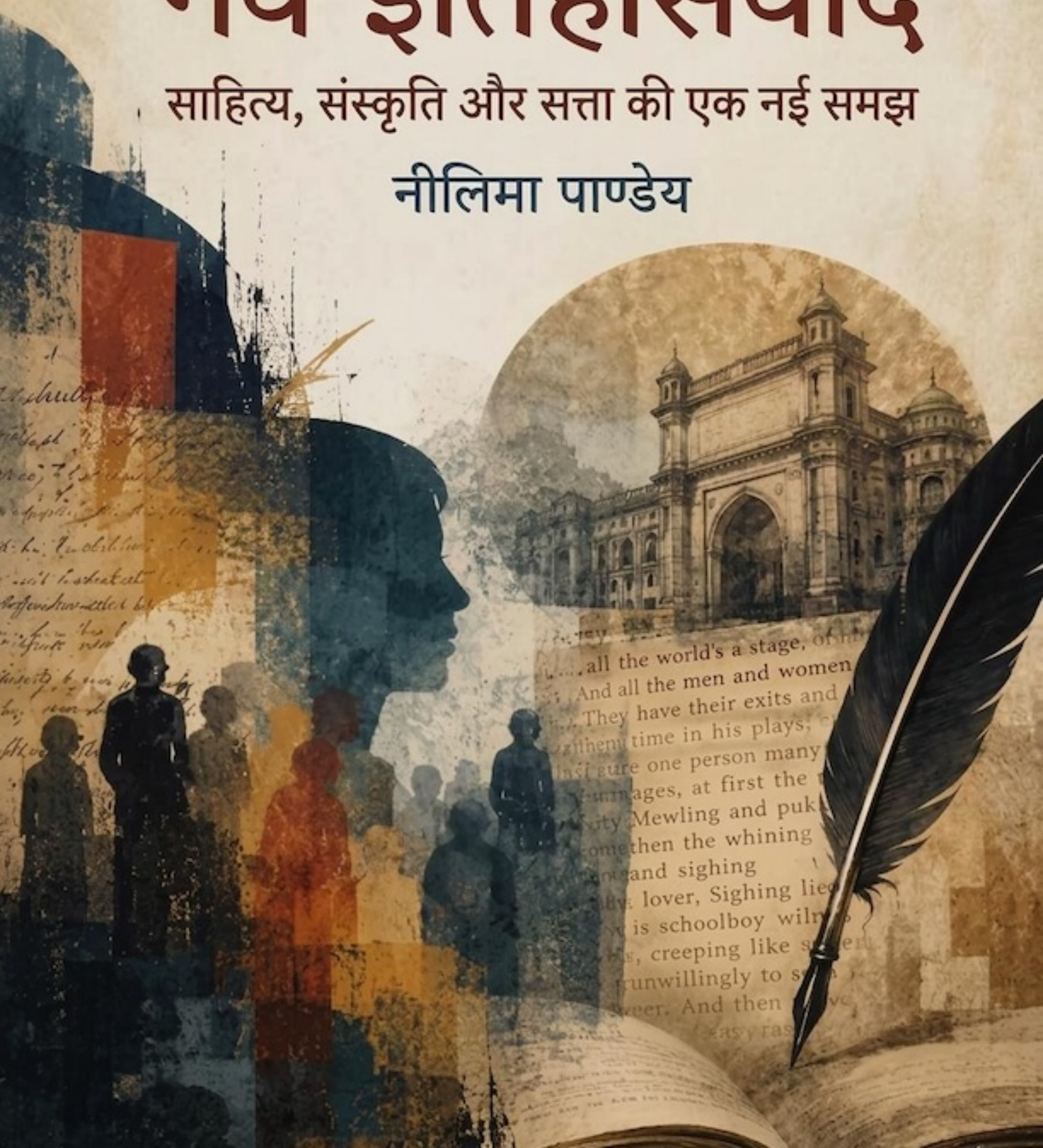


नव इतिहासवाद

साहित्य, संस्कृति और सत्ता की एक नई समझ

नीलिमा पाण्डेय



नव इतिहासवाद



नीलिमा पाण्डेय

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: मई, 2026

© नीलिमा पाण्डेय

समर्पण

छात्रों और शोधार्थियों के लिये

क्रम

प्रस्तावना	6
अध्याय 1: नव-इतिहासवाद क्या है?	11
अध्याय 2 : नव-इतिहासवाद का ऐतिहासिक विकास और पृष्ठभूमि	17
अध्याय 3 : प्रमुख सिद्धांतकार और उनके योगदान	27
अध्याय 4 : नव-इतिहासवाद की प्रमुख अवधारणाएँ और सिद्धांत	34
अध्याय 5 : नव-इतिहासवाद की कार्यप्रणाली और विधि	46
अध्याय 6: उदाहरणात्मक विश्लेषण	52
अध्याय 7 : नव-इतिहासवाद की आलोचना, सीमाएँ और अन्य सिद्धांतों से संवाद	87
अध्याय 8 : नव-इतिहासवाद का वर्तमान स्वरूप, प्रभाव और भविष्य	94
अन्त में...	104
परिशिष्ट	106
1. शब्दावली	106
2. नव-इतिहासवाद और इतिहास	108
3. मार्क्सवाद और नव-इतिहासवाद की तुलना	111
4. नव-इतिहासवाद और पोस्टकॉलोनियलिज्म	115
5. प्रेमचंद की गोदान पर तुलनात्मक व्याख्या	120
6. ज्ञान रंजन की कहानी “पिता” की तुलनात्मक व्याख्या	126
संदर्भ ग्रन्थ सूची	131

नव-इतिहासवाद

साहित्य, इतिहास और शक्ति का संवाद: साहित्य को क्या केवल शब्दों, प्रतीकों और सौंदर्य के रूप में पढ़ा जाना चाहिए?

या साहित्य उस समय की शक्तियों, संघर्षों और विमर्शों का जीवंत दस्तावेज़ है? यह पुस्तक नव-इतिहासवाद का स्पष्ट, गहन और व्यावहारिक परिचय है। स्टीफन ग्रीनब्लाट द्वारा प्रतिपादित यह सिद्धांत साहित्य को उसके ऐतिहासिक-सांस्कृतिक संदर्भ से अलग करके नहीं देखता, बल्कि साहित्य और इतिहास के पारस्परिक संबंध को केंद्र में रखता है। पुस्तक में आप पढ़ेंगे:

- नव-इतिहासवाद की मूल अवधारणाएँ- सामाजिक ऊर्जा का संचार, *containment vs. subversion*, मोटी वर्णन और उपाख्यान विधि
- शेक्सपियर के द टेम्पेस्ट और मैकबेथ का गहरा विश्लेषण
- प्रेमचंद की गोदान और कफन, भारतेन्दु का अंधेर नगरी, उदय प्रकाश का मोहन दास, ज्ञान रंजन की “पिता” और “घंटा” जैसी रचनाओं पर नव- इतिहासवादी दृष्टि
- दलित, स्त्रीवादी और समकालीन हिंदी साहित्य में इसका अनुप्रयोग

- सिद्धांत की आलोचनाएँ, सीमाएँ और 21वीं सदी में डिजिटल युग में इसका विस्तार

सरल भाषा, व्यावहारिक उदाहरण, विस्तृत शब्दावली के साथ यह पुस्तक छात्रों, शिक्षकों और गंभीर पाठकों के लिए एक आवश्यक साथी है। साहित्य को पढ़ना अब केवल आनंद नहीं — यह शक्ति से सवाल करना है। नव- इतिहासवाद — साहित्य को इतिहास से जोड़ने का सबसे जीवंत और प्रासंगिक सिद्धांत।

प्रस्तावना

साहित्य मानव जीवन की वह अनमोल धारा है जो समाज की धड़कनों को, उसके संघर्षों को, आकांक्षाओं को और विरोधाभासों को शब्दों में पिरोकर प्रस्तुत करती है। साहित्य मात्र मनोरंजन या सौंदर्य का साधन नहीं, बल्कि वह एक जीवंत दस्तावेज़ है जो समय की गहराइयों में छिपे सत्य को उजागर करता है। साहित्य को समझने का तरीका सदियों से बदलता रहा है। प्राचीन काल में साहित्य को मुख्यतः नैतिक शिक्षा या धार्मिक प्रचार का माध्यम माना जाता था। आधुनिक युग में, विशेषकर 20वीं सदी में, साहित्यिक आलोचना ने कई रूप धारण किए। न्यू क्रिटिसिज्म ने पाठ को उसके आंतरिक तत्वों (भाषा, रूप, प्रतीक, विडंबना) से अलग करके देखा और कहा कि "पाठ ही सब कुछ है"। लेखक की मंशा, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि या सामाजिक संदर्भ को दरकिनार कर दिया गया। संरचनावाद ने साहित्य को भाषाई संकेतों की व्यवस्था माना, जहाँ अर्थ भाषा की सार्वभौमिक संरचना से निकलता है। उत्तर-संरचनावाद ने अर्थ की अस्थिरता पर जोर दिया और पाठक की भूमिका को महत्वपूर्ण बनाया। इन सभी में साहित्य को अक्सर समय और समाज से अलग-थलग, शाश्वत कला के रूप में देखा गया। लेकिन क्या साहित्य वाकई इतना अलग-थलग हो सकता है? क्या कोई रचना—चाहे वह शेक्सपियर का नाटक हो, प्रेमचंद की कहानी हो या भारतेन्दु का निबंध—